Knowledgeable Research *ISSN 2583-6633* **Vol.02, No.02, September, 2023**

An International Peer-Reviewed Multidisciplinary Journal

Knowledgeable Research

ISSN 2583-6633

Vol.02 No.02. September 2023

http://www.knowledgeableresearch.com/

आधुनिक संस्कृत साहित्य में वैश्विक चिन्तन का अनुपम निदर्शन-''पत्रदूतम्''

डॉ. कल्पना शृगी

संस्कृत विभाग, सहायक आचार्य

राजकीय कला महाविद्यालय कोटा (राज.)

ईमेल: kalpanashringi@gmail.com

****

शोध संदर्भ:

''क्षणे क्षणे यन्नवतामुपैति तदेव रूपं रमणीयतायाः1 - शिशुपालवधम्।

इस उक्ति का अनुसरण करने वाला संस्कृत साहित्य वैदिक युग से अद्यावधि सतत प्रवहमाण है। संस्कृत साहित्य पर अधिकांशत पिछड़ेपन का आरोप लगाया जाता है, यहाँ तक की इसके लिये मृतभाषा जैसे अपशब्दों का प्रयोग भी किया जाने लगा है क्योंकि संस्कृत अपने और परायों दोनों से उपेक्षित है तथा समीक्षकों की दृष्टि में संस्कृत साहित्यकार किसी देश या काल विशेष तक ही सीमित रहता है किन्तु बीसवी शताब्दी मे संस्कृत में सर्जन की विशाल राशि सामने आई है।

आधुनिक साहित्यकार जहाँ एक ओर प्राचीन परम्पराओं को नये रूप में प्रस्तुत कर रहा है वहीं दूसरी ओर आधुनिकतम समकालीन कथ्य अपनी काव्य रचना के लिये चुन रहा है. विश्व में जो नवीनतम शैलियाँ और अभिव्यक्ति मुद्राएँ काव्यरचना के मुहावरों में उद्भूत हो रही है, उन्हें अपना रहा है. नये आविष्कारों और पदार्थों के लिये नये शब्दों के प्रयोग को अपनाने से भी नहीं हिचक रहा है। परम्परागत छन्दों, विषयों व विधाओं में पर्याप्त रूप से परिवर्तन हुये है तथा नित नये परिवर्तनों की ओर आधुनिक संस्कृत साहित्य निरन्तर अग्रेसित है।

कीवर्ड - शताब्दी, समकालीन, उपेक्षित, नवीनतम, मृतभाषा, छन्दोमुक्त, शकटारकाव्यम्, विप्रलम्भश्रृंगार, टेलीप्रिन्टर, युद्ध विभीषिका।

Knowledgeable Research *ISSN 2583-6633* **Vol.02, No.02, September, 2023**
An International Peer-Reviewed Multidisciplinary Journal

प्रस्तावना -

आज संस्कृत में जापानी तर्ज पर हाइकू व तान्का कविताएं लिखी जा रही है छन्दोमुक्त नूतन दृष्ट भंगी की आधुनिक कविताएं लिखी जा रही है. युग की पीड़ा, संत्रास और कुंठा को वाणी देने वाली काव्यरचना हो रही हैं, राजनीति के विदूरपों पर प्रहार संस्कृत काव्य द्वारा किया जा रहा है। पोस्टर कविताएँ विदेश वर्णन की कविताएं, प्रतीक कविताएं सब तरह की नई शैली की कविताएं प्रकाशित हो रही है। गद्य की तो अनेक विस्मयकारी नित्यनूतन विधाएं उद्भूत हो गई है। यह सब ‘‘पुराणि युवति‘‘ कही जाने वाली ‘अमर भाषा‘ की ‘चिरन्तनता‘ का ही करिश्मा है।

संस्कृत सर्जकों की अभिव्यक्ति वैश्विक चेतना को भी स्पर्श कर रही है। विश्व की घटनाओं प्रदेशों भाषा संस्कृति जीव सब तरह की नई शैली की कविताएं प्रकाशित हो रही है।

संस्कृत सर्जकों की अभिव्यक्ति वैश्विक चेतना को भी स्पर्श कर रही है। विश्व की घटनाओं, प्रदेशों, भाषा, संस्कृति, जीवन तथा साहित्य का अभ्यास तथा संवेदनाएं संस्कृत में प्रकट हो रही है।

‘शकटारकाव्यम्‘ में नेल्सन मण्डेला को संकेतित किया गया है। हर्षदेवमाधव के आतंकवाद में आतंकवाद का चित्रण व उग्रप्रकोप है। राधावल्लभ त्रिपाठी के लहरी काव्यों में सामाजिक विषमता का चित्रण है। वैश्विक घटनाओं के प्रति संस्कृत कवि का ध्यान आकर्षित हो रहा है। देश के विभिन्न विद्या केन्द्रों में संस्कृत के शास्त्रानुशीलन व साहित्य सर्जन की अजस्र परम्परा रही है। उनमें प्रमुख रूप से काशी, दरभङ्गा, नवद्वीप, बड़ौदा आदि तो अग्रणी है ही साथ ही दिल्ली, मुम्बई आदि महानगर भी पीछे नहीं हैं, इन सब केन्द्रों से संस्कृत सर्जन और प्रकाशन हो रहा है पत्र-पत्रिकाएं निकल रही है। जयपुर इस दृष्टि में सदा ही सौभाग्यशाली रहा है, यहाँ संस्कृत शिक्षा केन्द्र भी पनपे तथा संस्कृत की पत्र-पत्रिकाएं भी निकली, यही कारण है कि यहाँ नूतन साहित्य रचना के लिये भूमि सदा उर्वरा रही है।

काव्य रचना में नवीन छन्दों की अवतारणा नये विषयों पर नई शैलियों में लेखन के जो नये प्रयोग हो रहे हैं, उनमें कवि शिरोमणि भट्टमथुरानाथशास्त्री अग्रणी हैं. उनका प्रेरणात्मक प्रभाव नवसर्जकों पर भी पड़ा है यही कारण है कि राजस्थान में अनेक रचनाकार आधुनिक काव्य सर्जना पर निरन्तर अपनी लेखनी चला रहे हैं। जयपुर की विद्वद्माला के मौक्तिक पं. मोहन लाल शर्मा ‘पाण्डेय‘ जयपुर की कवि परम्परा की अग्रिम पंक्ति में गणनीय है।

Knowledgeable Research *ISSN 2583-6633* **Vol.02, No.02, September, 2023**
An International Peer-Reviewed Multidisciplinary Journal

अजमेरस्थ राजकीय संस्कृत महाविद्यालय के प्राचार्य पद से सेवानिवृत्त होकर कवि पाण्डेय साहित्य साधना में रत है। इनका कृतित्व क्षेत्र अत्यन्त व्यापक है। आपका 'पùिनी' उपन्यास ऐतिहासिक धारा में मुख्य स्थान रखता है। चित्तौड़ नगर की गौरव गाथा को प्रकट करने वाला 'रसकपूरम्' गद्यकाव्य भी आधुनिक शैली का गद्यकाव्य है आकाशवाणी- दूरदर्शन सहित आपकी विभिन्न रचनाएं अनेक पत्रिकाओं में प्रकाशित हुई हैं। आप 'स्वरमङ्गला' के सम्पादक भी रहे हैं। 'पद्मिनी' उपन्यास के बाद आपका नूतन विषय संदृब्ध, नूतन शैली निबद्ध खण्डकाव्य 'पत्रदूतम्' वैश्विक फलक पर नवीन हस्ताक्षर है। खाड़ी युद्ध को लक्ष्यकर विरचित 'पत्रदूतम्' खण्डकाव्य राजस्थान संस्कृत अकादमी के सर्वोच्च माघ पुरस्कार से पुरस्कृत है।

'पत्रदूतम्' खण्डकाव्य भी है और दूतकाव्य भी कविकुल गुरु कालिदास ने विरही यक्ष की भावना तरल वर्णन करने हेतु यह नूतन उद्भावना सहस्रो वर्षों पूर्व की थी कि वह अपना संदेश अपनी प्रिया को किसी माध्यम से पहुँचाए जिसके फलस्वरूप कवि ने संयोग, विप्रलम्भश्रृंगार में अनेक वद्यो को निबद्ध किया। संदेश वाहक के रूप में कालिदास की कल्पना में 'मेघ' को चुना और 'मेघदूतम्' की सृष्टि हुई। तब से लेकर अब तक काव्य की ऐसी परम्परा पनपी कि नेमिदूतम्, हंसदूतम्, रथाङ्गदूतम्, मनोदूतम्, गुणदूतम् आदि न जाने कितने संदेश वाहको की परिकल्पना पर सैकड़ों दूतकाव्यों की रचना हुई।

आज हम 21वी सदी में पदार्पण कर चुके है। आज के सुपरिचित दूत है डाक-तार, टेलीफोन, फेक्स, टेलीप्रिन्टर, इंटरनेट, ई-मेल आदि कविवर पाण्डेय ने पत्र को दूत बनाकर युगोचित परिकल्पना की है और दूतकाव्य के लिये जो विषय अर्थात कथ्य वस्तु पाण्डेय जी चुनी है वह आधुनिक संस्कृत कवियों के द्वारा बिल्कुल अछूती क्रान्तिकारी और अभिनव प्रयास है।

'पत्रदूतम्' वैश्विक सन्दर्भ में निम्नांकित बिन्दुओं के द्वारा परखा जा सकता है।

(1) कथावस्तु:- 'पत्रदूतम्' का वर्ण्य विषय परम्परावादी होते हुए भी अभिनव आयाम के साथ प्रस्तुत हुआ है। इस काव्य का आधार खाड़ी युद्ध है। सन् 1990 में ईराक द्वारा विस्तारवादी नीति के अन्तर्गत कुवैत पर कब्जा करने तथा अमानवीय कृत्यों की बर्बरता से सम्पूर्ण विश्व दहल उठा था. अमेरिका ने अपने मित्र राष्ट्रों के सहयोग से दुर्दान्त नीति का विरोध कर मानवता की रक्षा के लिये समूचे विश्व का आह्वान कर ईराक का विरोध करने का दुस्साहस किया तथा अन्य देशों के साथ विचार-विनिमय कर ''ऑपरेशन डेजल्ट शील्ड'' हाथ में लिया और 6 अगस्त 1990 को मित्र राष्ट्रों की ओर से प्रतिरक्षात्मक कदम उठाया गया।

Knowledgeable Research *ISSN 2583-6633* **Vol.02, No.02, September, 2023**
An International Peer-Reviewed Multidisciplinary Journal

यहीं से इस काव्य का आरम्भ होता है। अमेरिका राष्ट्रपति बुश की आज्ञा से वायुसेना अधिकारी नायक अरब राष्ट्र को जाने के लिये माता-पिता की आज्ञा पाकर अपनी प्रिय पत्नी के पास पहुँचकर स्नेहपूर्वक उसे युद्ध में जाने की सूचना देता है और उसकी पत्नी भी उसे आशंकित मन से युद्ध में जाने को कहती है, जैसा कि कवि के द्वारा व्यक्त किया गया है

''नो प्रत्यादेशनीया गुरूतरविरहा कामिभिर्नैव सह्या।।2

जब नायक अरब राष्ट्र पहुँच जाता है, तो वह अपनी पत्नी को स्मरण करते हुए पत्र लिखता है। नायक ने इसी पत्र को दूत बनाकर अपनी पत्नी को मार्ग वर्णन से लेकर, ईराक द्वारा कुवैत पर किये जाने वाले अत्याचार, युद्ध, नरसंहार, शस्त्र युद्ध विभीषिका का अत्यत्न मार्मिक वर्णन किया है। यथा प्रस्तुत श्लोक से परिलक्षित होता है।

'अत्याचारा असंख्या बहुविधभयदा घोरबाधाः कृतास्तै

र्नासा ग्रीवाश्च भिन्ना युवनरवृषणाः स्फोटितास्तीक्ष्णशस्त्रैः।

सद्यो जाता हि डिम्भा गदहरणपदे मारिता अङ्गभङ्ग

स्त्रीणां भग्नं सतीव युवजनरुधिरं प्रोद्धृतं नालयन्त्रैः।।[3]

नायक संदेश भिजवाता है कि युद्ध के अन्त में सद्दाम हुसैन ने अपनी पराजय स्वीकार की और कुवैत से अपनी सेना हटाने का आदेश जारी किया तथा युद्ध विराम के पश्चात् मित्र राष्ट्रों की सेना भी अपने देश को लौटने लगी है अतः हम भी अब शीघ्र ही मिल सकेंगे।

अन्त में नायक जब अपने देश लौट आता है तब अपने माता पिता और पत्नी से मिलता है तथा अन्य परिजन उसे विजय की हार्दिक बधाई देते हैं तथा विजयोत्सव के रूप में पार्टी का आयोजन किया जाता है तथा ईसा मसीह के आगे विनम्रता से सिर झुकाकर नायक व नायिका प्रार्थना करते हैं कि विश्व में कोई भी राष्ट्र युद्ध का विचार भी न करे।

संस्कृत साहित्य में 'पत्रदूतम्' एक ऐसी प्रथम रचना है जो विश्वजनीन व सार्वभौमिक आधार को लेकर आगे बढ़ी है, जिसने पौराणिक आख्यान परम्परा की सीमाओं को लांघकर मुक्ताकाश को देखने का प्रयास किया है। युद्ध को वर्ण्य विषय बनाकर काव्य लिखना यह 'कवि पाण्डेय का अनोखा प्रयोग था, यह और भी मौलिक प्रयोग था कि इसके वर्णन के लिये उन्होंने दूतकाव्य की विधा चुनी और उसमें भी स्वयं वर्णन न करके नायक के द्वारा अपनी पत्नी को लिखे गये पत्र के माध्यम

Knowledgeable Research *ISSN 2583-6633* **Vol.02, No.02, September, 2023**
An International Peer-Reviewed Multidisciplinary Journal

से खाड़ी युद्ध का वर्णन अनोखे ढंग से प्रस्तुत किया है। इन दो प्रयोगों के साथ इन्होंने जो छन्द चुना है वह भी संस्कृत का क्लासिकल छन्द है- 'स्रग्धरा' साथ ही जो भाषा प्रयुक्त की है वह भी व्याकरण से शुद्ध ब सुगठित है।

कवि ने अवश्य ही कथावस्तु में आधुनिकता का दृष्टिकोण अपनाया है किन्तु संस्कृति में आधुनिकता को कदापि नहीं अपनाया भारतीय संस्कृति के मूल्यों के संरक्षण व प्रचार-प्रसार के हित में कवि का व्यापक दृष्टिकोण रहा है, तभी तो कवि ने आदर्श गृहस्थ की कल्पना कर अमेरिका में भी नारी के कर्तव्य को सही दिशा देने की चेष्टा की है। यथा नायक नायिका से युद्ध में जाते समय कहता है कि -

''सेवार्थं तिष्ठ पित्रोरुत्वमसि सुगृहिणी गेहकार्ये प्रदक्षा

त्वन्निघ्नं दासवृन्द प्रचुरमपि धनञ्जीवनं मे च भव्यम्।''[4]

तथा पाश्चात्य संस्कृति के वातावरण में भी पिता के हृदय की मनोवैज्ञानिकता, माता के हृदय की विशालता और त्याग गुरुता का परिचय भारतीय आदर्शो से सामजस्य रखती है यथा -

'शौर्याते 'वीरमाता' रिपुदमनवशाद् 'देशमाता' भवेयं

नो स्तन्यं गर्हितं स्यात्समरभुवि सदा पृष्ठभागावलोकात् ।

''स्वर्माता'' प्राणदानाद् रणगमनफलं याच ईसामसीह,

गर्वात् स्या 'राष्ट्रमाता' भुवि तव विजयात्प्राप्तवन्यास्पदञ्च।।[5]

(2) दूतकाव्य परम्परा - दूतकाव्य परम्परा का अतिप्राचीन इतिहास रहा है यह एक ऐसी आत्मकथा परक विधा है, जिसके लिये माध्यम का चयन किया जाता है तथा प्रत्यक्ष कथन के अपेक्षा परोक्षकथन की मुक्ताभिव्यक्ति की सफल विधा है। इस परम्परा का आरम्भ 'महाकवि कालिदासरचित' 'मेघूदतम्' से माना जाता है इसमें कवि की कल्पना ने यक्ष की भावनाओं को यक्षिणी तक पहुँचाने के लिये मेघ को माध्यम बनाया, तत्पश्चात् अनेक दूतकाव्यों की रचना हुई।

''कवि पाण्डेय ने जब विषयवस्तु को चुनने में आधुनिकता का पूर्ण ध्यान रखा तो दूत को चुनने में भी वे आधुनिकता की दौड़ में किसी से पीछे नहीं हैं हालांकि आधुनिक युग में ई-मेल, टेलीप्रिन्टर इत्यादि आधुनिक उपकरण माध्यम का कार्य करते हैं परन्तु कथा वस्तु के अनुरूप युद्ध के समय में पत्र ही सैनिकों के लिये समय व्यतीत करने के सबसे उपयुक्त साधन होता है, युद्ध में जाने से पूर्व तथा युद्ध में आने के पश्चात् ही नायक-नायिका का प्रसङ्ग उजागर हुआ है और यह विरह काल

Knowledgeable Research *ISSN 2583-6633* **Vol.02, No.02, September, 2023**
An International Peer-Reviewed Multidisciplinary Journal

दोनों के लिये असहनीय था, समय व्यतीत करने में सबसे अच्छी भूमिका पत्र रूपी माध्यम ने निभाई है। अतः यही कारण है कि इस काव्य का नाम 'पत्रदूतम्' रखा गया।

'युद्धादिष्टीप्सवस्ते निजनिजशिविरं प्रावसज्जैत्रयोधाः,

सेनाध्यक्षेण तत्र प्रखरमतिजुषा निर्मिता व्यूहमेदाः ।

युद्धाभावादिदानीं बहुसमयवशात् सर्ववृत्तान्तपूर्णम्,

जीवाधारं प्रियायाः शुभवचनमयं प्रेष्यते 'पत्रदूतम् ।।'"[6]

सम्पूर्ण विश्व में सैनिकों की दिनचर्या में पत्र ही उनके और परिजनों के मध्य दूत का कार्य करता है। सैनिक अपने शिविरों में बैठकर खाली समय में पत्र लिखकर और पढ़कर ही अपनी मानसिकता को बहलाने का सम्पूर्ण विश्व में सैनिकों की दिनचर्या में पत्र ही उनके और परिजनों के मध्य दूत का कार्य करता है। सैनिक अपने शिविरों में बैठकर खाली समय में पत्र लिखकर और पढ़कर ही अपनी मानसिकता को बहलाने का यत्न करते है। यहाँ कवि ने पत्र के माध्यम से कुछ न कहलाकर 'पत्र' को मात्र संकेत बताया है।

सभी दूतकाव्यों में भौगोलिक, सामाजिक व सांस्कृतिक परिवेश के मुख्य मार्ग के विश्रान्ति केन्द्रों का चित्रण निसर्गत प्राप्त होता है, किन्तु 'पत्रदूतम्' में इसे पर्याप्त स्थान नहीं मिल पाया है, यद्यपि परम्परा का निर्वाह किया गया है किन्तु समुद्री मार्ग होने के कारण केवल समुद्र का ही वर्णन प्राप्त हुआ है। अपनी प्रियतमा को पत्र लिखा हुआ नायक यात्रा प्रसङ्ग में समुद्र का चित्रण करते हुये कहता है। -

कान्ते! शम्मे शुमन्ते प्रभुपददवया वर्धतां नित्यमेव

यद् दृष्टं वर्ण्यते तत् पथि गगनतलाच्छूयतां सावधानम्।

पारावरः सरोषो घनरसभरित प्रोर्ध्वकल्लोलबाहुः,

प्रोत्प्लुत्येवाम्बुचौरान् वियति रसधरानीहते संगहीतुम्।।[7]

दूतकाव्य की विधा के अन्तर्गत युद्ध के वर्णन का आधिक्य होने के कारण इसे युद्धकाव्य तथा शस्त्रों का वर्णन अधिकता से होने के कारण इसे शस्त्रकाव्य के रूप में भी अभिहित किया जा सकता है।

Knowledgeable Research *ISSN 2583-6633* **Vol.02, No.02, September, 2023**
An International Peer-Reviewed Multidisciplinary Journal

नवीन शब्दावली का प्रयोग - आधुनिक साहित्यकारों ने न केवल आधुनिक विषय-वस्तु विधा आदि पर दृष्टि डाली है अपितु इन्होंने अपने काव्यों के लिये नवीन शब्दावली का भी भरपूर प्रयोग किया है। इस नये प्रयोग में 'भट्टमथुरानाथ शास्त्री' अग्रणी कहे जा सकते है। उसी तरह कवि पाण्डेय ने भी अपने काव्य के अनुरूप नई संज्ञाओं, नए नामो, शस्त्रों स्थानों आदि के लिये नये शब्दों का प्रयोग किया है।

जहाँ देशनाम या शस्त्रनाम आया है, वह तो संज्ञा शब्द होने के कारण ज्यों के त्यों प्रयुक्त किये गये, जहाँ उनका संस्कृतीकरण किया जा सकता था, वहाँ उसे संस्कृत शब्द बनाकर प्रयुक्त किया गया तथा जहाँ पशु-पक्षियों का वर्णन आया वहाँ शास्त्रानुसार शब्द रखे गये हैं। यथा-

'राजीवान् रोहितान् मद्गुर शकुलतिमीन् शालपाठीननक्रा-
नुद्रान् शङ्कून् कुलीरान् मकरकमठकान् ग्राहगण्डूपदादीन्
शृङ्गीशिल्यादियुक्तान् परमरसमयान् केलिलग्नान् विशालान्
दृष्ट्वाऽतुष्यं सलिरचरान् व्योम्नि नीले समुदे ।।''[8]

जैसे स्केटिंग के लिये कवि ने 'स्खनलमयगमे' और हवाई पट्टी के लिये 'वातपट्टान्चिते' शब्दों का प्रयोग किया है। संज्ञा पदो में पेट्रोल जैसे शब्दों का तथा देशनामों का प्रयोग संस्कृत विभक्तियाँ लगाकर किया है।

काव्य में युद्ध वर्णन होने के कारण इस काव्य की यह देन तो अवश्य है कि संस्कृत पाठक नवीनतम पाश्चात्य सैन्यविज्ञान के शब्दों तथा युद्ध में प्रयोग किये जाने वाले अस्त्रों से पूर्ण रूप से परिचित हो जायेगा यथा- 'सर्वोत्सारी यंत्र' (बुलडोजर), स्टेल्थ (117 स्टेल्थ), आब्राम्स (3 ई. अवाक्स), स्कड नामक प्रक्षेपास्त्र, पेट्रियट नामक प्रक्षेपास्त्र, कलस्टर बम आदि तकनीकी नामों का प्रयोग कर युद्ध विवरण को यथार्थता प्रदान की गई है।

अभिव्यक्ति के प्रवाह में तथा यथार्थता को प्रदान करने में कवि के द्वारा अप्रचलित नूतन शब्दों का प्रयोग कभी-कभी पाठक को विचित्र स्थिति में पहुंचा देता है किन्तु कवि ने इसके लिये पाद टिप्पणी व विषमपद टिप्पणी को देकर पाठक को विवक्षितार्थ समझाने में सहायता की है। इस प्रकार पारम्परिक काव्य शैली और नूतन कथ्य का संगम इस काव्य का अभिनव प्रयास है।

Knowledgeable Research *ISSN 2583-6633* **Vol.02, No.02, September, 2023**
An International Peer-Reviewed Multidisciplinary Journal

उद्देश्य - साहित्य प्रारम्भ में ही समाज का दर्पण माना जाता है साहित्य उसी को परिलक्षित करता है जो समाज में घटता है. आज समाज में स्वार्थपन, लोलुपता, विस्तारनीति परिलक्षित हो रही है, तो सम्भव है कि आधुनिक साहित्य में भी इन सबका ही उल्लेख प्राप्त होगा. आधुनिक संस्कृत साहित्य को न केवल विषय वस्तु कालक्रम विधा तथा नवीन शब्दों का प्रयोग होने के कारण आधुनिक सार्वभौमिक तथा वैश्विक बना रहे हैं अपितु वर्तमान में साहित्य समाज के लिये कुछ उपयोगी भी होना चाहिये, जिसके कारण वह अपना उचित स्थान प्राप्त कर सके। यदि साहित्य की समाज को कोई देन न होगी या भावी पीढ़ी के लिये कोई सन्देश न होगा तो साहित्य मात्र पठन साहित्य बन कर रह जायेगा उसे युगानुरूप वैश्विक चिन्तन में स्थान प्राप्त नहीं होगा, किन्तु कविवर पाण्डेय ने इस रिक्त स्थान की भी पूर्ति अपने काव्य में की है, जिसके कारण ही 'पत्रदूतम्' को वैश्विक साहित्य में परिगणित किया जाता है। पत्रदूतम् भी निम्नांकित उद्देश्यों की पूर्ति द्वारा विद्वज्जनों में प्रशंसनीय है -

1. प्रस्तुत काव्य में युद्ध की विभीषिका अर्थात् ताण्डव को बखूबी दर्शाया है, जो न केवल मनुष्यों के लिये अपितु सारी प्रकृति के लिये विघटनकारी है।

2. प्रस्तुत काव्य में कवि ने सद्दाम हुसैन के स्वभाव की उग्रता व सैनिकों की क्रूरता का ऐसा वर्णन किया है कि पाठक भूल से भी सद्दाम को इस काव्य का नायक नहीं समझता है तथा प्राणिमात्र का ध्यान युद्ध में होने वाले अत्याचारों की तरफ आकर्षित किया है।

3. कवि ने इस काव्य के द्वारा यह भी सन्देश दिया है कि दो राष्ट्रों के बीच में युद्ध के समय में अन्धाधुन्ध होने वाले शस्त्रों के प्रयोग को रोका जाए।

4. अन्त में नायक ने ईसामसीह के समक्ष प्रार्थना करता है कि विश्व में कोई भी देश युद्ध का विचार भी न करे और सभी शान्तिपूर्ण ढंग से जीवन जी सके।

5. नायक चाहता है कि इस संसार में विश्वजनीन शान्ति और मनुजता प्रवृत्त हो। भारतीय संस्कृति का मूलमन्त्र 'वसुधैव कुटुम्बकम्', 'सर्वे भवन्तु सुखिनः', 'सर्वे सन्तु निरामयाः' की भावना से विश्वजनीन शान्ति का साम्राज्य स्थिर हो, कवि की ओर से भरत वाक्य के रूप में यही कामना है।

इस प्रकार यह काव्य विश्व शान्ति का अग्रदूत माना जा सकता है। इस काव्य को खण्डकाव्य भी कहा जा सकता है। दूतकाव्य तथा युद्धकाव्य और युद्ध के शस्त्रों का पर्याप्त वर्णन प्राप्त होने के कारण शस्त्रकाव्य भी कहा जा सकता है। किन्तु

Knowledgeable Research *ISSN 2583-6633* **Vol.02, No.02, September, 2023**
An International Peer-Reviewed Multidisciplinary Journal

कवि ने इसे ऐतिहासिक काव्य भी कहा है। कहा जा सकता है कि पत्रदूतम् आधुनिक संस्कृत साहित्य में वैश्विक चिन्तन का अनुपम निदर्शन है।

सन्दर्भ सूची

1. शिशुपालवधम्, 4-17

2. पत्रदूतम् 23 पद्य संख्या 14

3. पत्रदूतम् पद्य संख्या 39

4. पत्रदूतम् पद्य संख्या-15

5. पत्रदूतम् पद्य संख्या-22

6. पत्रदूतम् पद्य संख्या - 12

7. पद्य संख्या-23

8. पद्य संख्या-25

Received Date:11.09.2023
Published Date:30.09.2023